

मध्यकालीन भारत का इतिहास

(Medieval History of India)



**NEW INDIA
EDUCATION (NIEd)**

— संकल्प आपका, साथ हमारा —

★ **IAS / RAS** ★
AND ALL OTHER
COMPETITIVE EXAMS

**RAS
EXAM**

मध्यकालीन भारत का इतिहास

MEDIEVAL HISTORY OF INDIA

- 1  राजपूत काल
- 2  गुलाम वंश
- 3  खिलजी, तुगलक, सैयद एवं लोदी
- 4  विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य
- 5  भक्ति एवं सूफी आंदोलन
- 6  बाबर, हुमायूँ एवं शेरशाह
- 7  अकबर से औरंगजेब
- 8  उत्तर मुगलकाल एवं क्षेत्रीय शक्तियाँ
- 9  मध्यकालीन प्रशासन, समाज एवं अर्थव्यवस्था
- 10  मध्यकालीन कला, स्थापत्य एवं साहित्य

By
OMKAR SIR
MENTOR & EDUCATOR



NCERT से
Advanced Level तक



परीक्षा केन्द्रित
सटीक सामग्री



तथ्यात्मक, सरल भाषा
एवं बेहतर समझ



IAS, RAS एवं अन्य
प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु
उपयोगी



टॉपर्स के नोट्स एवं
परीक्षा में पूछे गए
प्रश्नों का समावेश

★ ★ ★
COMPLETE
STUDY MATERIAL
FOR YOUR
SUCCESS

पुस्तक परिचय (Introduction)

भारत का मध्यकालीन इतिहास लगभग 8वीं-9वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी के मध्य तक फैला वह विशाल कालखंड है, जिसने भारतीय उपमहाद्वीप की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक संरचना को गहराई से गढ़ा। यह वह दौर है जब राजपूत रियासतों के त्रिकोणीय संघर्ष से लेकर दिल्ली सल्तनत की स्थापना, विजयनगर-बहमनी साम्राज्यों के उत्कर्ष, भक्ति-सूफी आंदोलनों के सामाजिक-धार्मिक समन्वय, मुगल साम्राज्य के स्वर्णिम वैभव, तथा अंततः मराठा-सिख शक्तियों के उदय व क्षेत्रीय राज्यों के विकेंद्रीकरण तक — भारत ने अनेक राजनीतिक उतार-चढ़ाव व सांस्कृतिक संश्लेषण देखे।

यह पुस्तक 10 विस्तृत अध्यायों में इस संपूर्ण कालखंड को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करती है — प्रत्येक अध्याय को स्वयं में पूर्ण (self-explanatory), हुक-स्टोरी आधारित परिचय, विस्तृत तुलनात्मक तालिकाओं, दरबार-राजवंश बॉक्स, स्रोत-विवरण, UPSC व RAS दोनों प्रारूपों में उत्तर-लेखन कोण, परीक्षा-उपयोगी तथ्य-सूची (keyBox), पिछले वर्षों के प्रश्नों (PYQs) तथा कालानुक्रमिक तालिका (Timeline) के साथ तैयार किया गया है — ताकि किसी भी प्रतियोगी परीक्षा (UPSC IAS, RAS, SSC, Railway, State PCS) की तैयारी में यह एकमात्र संदर्भ-स्रोत बन सके।

अध्ययन-सुझाव: प्रत्येक अध्याय को क्रमवार पढ़ें, क्योंकि अध्याय एक-दूसरे से जुड़े हैं (उदाहरण: सिख गुरु-परंपरा Ch05 में, जबकि सिख साम्राज्य का राजनीतिक विकास Ch08 में है)। हर अध्याय के अंत में दिया गया keyBox व PYQ अनुभाग रिवीज़न के लिए सर्वोत्तम है।

संपूर्ण अध्याय-सूची (Complete Chapter Index)

अध्याय	शीर्षक (हिंदी)	विषय-वस्तु संक्षेप
Ch00	परिचय एवं अध्याय-सूची	विषय परिचय, अध्ययन-सुझाव, संपूर्ण अनुक्रमणिका
Ch01	प्रारंभिक मध्यकाल: राजपूत काल	राजपूतों की उत्पत्ति, त्रिपक्षीय संघर्ष (प्रतिहार-पाल-राष्ट्रकूट), प्रमुख राजपूत वंश, समाज-अर्थव्यवस्था-कला
Ch02	दिल्ली सल्तनत — गुलाम वंश	अरब-तुर्क आक्रमण, तराइन के युद्ध, ऐबक-इल्तुतमिश-रजिया-बलबन, प्रशासन एवं स्थापत्य
Ch03	खिलजी, तुगलक, सैयद, लोदी	अलाउद्दीन खिलजी के सुधार, मुहम्मद बिन तुगलक के प्रयोग, फिरोज़ शाह, प्रथम पानीपत युद्ध (1526)
Ch04	विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य	कृष्णदेवराय, तालीकोटा का युद्ध, बहमनी प्रशासन, दक्कन सल्तनतें
Ch05	भक्ति एवं सूफी आंदोलन	आलवार-नयनार से कबीर-नानक-मीरा तक, सिख गुरु-परंपरा, चिश्ती-सुहरावर्दी सिलसिले
Ch06	मुगल साम्राज्य: बाबर, हुमायूँ, शेरशाह सूरी	प्रथम पानीपत युद्ध, खानवा-चंदेरी-घाघरा, शेरशाह का प्रशासन एवं राजस्व सुधार
Ch07	मुगल साम्राज्य: अकबर से औरंगजेब	राजपूत-धार्मिक नीति, दीन-ए-इलाही, मनसबदारी, दहसाला व्यवस्था, ताजमहल, औरंगजेब की दक्कन नीति
Ch08	उत्तर मुगलकाल एवं क्षेत्रीय शक्तियाँ	मुगल पतन के कारण, शिवाजी-अष्टप्रधान-पेशवा युग, तृतीय पानीपत युद्ध, रणजीत सिंह, हैदराबाद-बंगाल-अवध

Ch09	मध्यकालीन प्रशासन, समाज एवं अर्थव्यवस्था	सल्तनत-मुगल प्रशासन तुलना, इक्ता-जागीर-मनसब, महिलाओं की स्थिति, व्यापार, यूरोपीय कंपनियों का आगमन
Ch10	मध्यकालीन कला, स्थापत्य एवं साहित्य	इंडो-इस्लामिक स्थापत्य विकास, मुगल व राजपूत-पहाड़ी चित्रकला, संगीत, फारसी-क्षेत्रीय साहित्य

भाग-वार विभाजन

- ◆ **भाग A — प्रारंभिक मध्यकाल एवं सल्तनत (Ch01-Ch03):** राजपूत काल से लेकर दिल्ली सल्तनत के अंत (1526 ई.) तक।
- ◆ **भाग B — क्षेत्रीय साम्राज्य एवं सामाजिक-धार्मिक आंदोलन (Ch04-Ch05):** दक्कन की शक्तियाँ तथा भक्ति-सूफी परंपरा।
- ◆ **भाग C — मुगल साम्राज्य (Ch06-Ch07):** बाबर से औरंगजेब तक — मुगल सत्ता का उत्थान व चरम विस्तार।
- ◆ **भाग D — उत्तर मुगलकाल एवं समेकित अध्ययन (Ch08-Ch10):** क्षेत्रीय शक्तियों का उदय, प्रशासन-समाज-अर्थव्यवस्था तथा कला-स्थापत्य-साहित्य का समेकित विवरण।

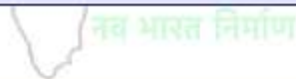
"इतिहास केवल तिथियों व नामों का संग्रह नहीं, बल्कि यह समझने की कला है कि वर्तमान किन शक्तियों से गढ़ा गया है — मध्यकालीन भारत का अध्ययन हमें विविधता में एकता, संघर्ष में समन्वय, तथा परिवर्तन में निरंतरता का पाठ सिखाता है।"

— ओंकार सर, New India Education (NIEd)



📋 विषय-सूची (Index)

1. राजपूतों की उत्पत्ति के सिद्धांत (Origin Theories of Rajputs)
2. त्रिपक्षीय संघर्ष (Tripartite Struggle) — कन्नौज पर अधिकार की लड़ाई
3. गुर्जर-प्रतिहार वंश (Gurjara-Pratihara Dynasty) — पूर्ण विवरण
4. पाल वंश (Pala Dynasty) — पूर्ण विवरण
5. राष्ट्रकूट वंश (Rashtrakuta Dynasty) — पूर्ण विवरण
6. प्रमुख राजपूत वंश — चौहान, सोलंकी, परमार, चंदेल, गहड़वाल (विस्तृत)
7. पृथ्वीराज चौहान एवं तराइन की पूर्व-भूमिका
8. राजपूत काल की शासन व्यवस्था (सामंतवाद)
9. अर्थव्यवस्था, व्यापार एवं मुद्रा-व्यवस्था (Economy, Trade & Coinage)
10. धर्म एवं धार्मिक सहिष्णुता (Religion & Religious Tolerance)
11. भाषा एवं साहित्य (Language & Literature)
12. राजपूत समाज, स्त्री की स्थिति, कला-स्थापत्य
13. विदेशी यात्रियों के विवरण (Al-Biruni, अरब यात्री)
14. राजपूतों की तुर्क आक्रमणकारियों से पराजय के कारण
15. ऐतिहासिक स्रोत (Prithviraj Raso, Prithviraja Vijaya आदि)



🎬 शुरुआत — एक कहानी से

कल्पना कीजिए — आठवीं सदी का उत्तर भारत। हर्षवर्धन की मृत्यु (647 ई.) के बाद उसका बनाया हुआ बड़ा साम्राज्य बिखर चुका है। कोई एक शक्तिशाली केंद्रीय सत्ता नहीं बची। ऐसे समय में एक शहर था — "कन्नौज" (आज के उत्तर प्रदेश में) — जो गंगा किनारे बसा, व्यापार से समृद्ध और हर्ष की पुरानी राजधानी होने की वजह से "प्रतिष्ठा और सत्ता का प्रतीक" बन चुका था। जो भी राजा कन्नौज पर कब्जा कर लेता, वह खुद को उत्तर भारत का सबसे बड़ा शासक मानता। इसी एक शहर को पाने के लिए भारत के तीन कोनों से तीन बड़ी ताकतें उठ खड़ी हुई — उत्तर-पश्चिम से गुर्जर-प्रतिहार, पूर्व (बंगाल-बिहार) से पाल, और दक्षिण (दक्कन) से राष्ट्रकूट। लगभग 150 साल (लगभग 790-950 ई.) तक चला यह संघर्ष इतिहास में "त्रिपक्षीय संघर्ष (Tripartite Struggle)" कहलाता है। इसी उथल-पुथल भरे दौर से निकलकर छोटे-छोटे योद्धा कुल आगे चलकर "राजपूत" कहलाए, जिन्होंने आने वाली कई सदियों तक उत्तर व मध्य भारत पर राज किया — लेकिन यही सामंती बिखराव आगे चलकर उन्हें विदेशी आक्रमणकारियों के सामने कमजोर भी बना गया। यही है इस अध्याय की पूरी कहानी — उत्थान से लेकर पतन तक।

1. राजपूतों की उत्पत्ति के सिद्धांत (Origin Theories of Rajputs)

"राजपूत" शब्द संस्कृत के "राजपुत्र" (राजा का पुत्र) से बना है। यह शब्द सबसे पहले लगभग छठी शताब्दी ई. के आसपास प्रयोग में आना शुरू हुआ, लेकिन एक अलग योद्धा-जाति (community) के रूप में राजपूतों का उभार आठवीं-नौवीं सदी में हुआ और

वे छठी से बारहवीं सदी के बीच अपने प्रभाव के शिखर पर पहुँचे। इनकी उत्पत्ति को लेकर इतिहासकारों में आज भी एक राय नहीं है, इसलिए हमें दोनों/सभी मत जानने चाहिए।

(A) अग्निकुल सिद्धांत (Agnikula Theory)

यह सबसे प्रचलित (popular) पौराणिक कथा है। कहा जाता है कि माउंट आबू (राजस्थान) पर ऋषि वशिष्ठ ने एक यज्ञ किया था। जब राक्षसों ने उस यज्ञ को भंग करने की कोशिश की, तो यज्ञ की अग्नि-कुंड (fire pit) से चार वीर योद्धा प्रकट हुए — ये चार वंश आगे चलकर "अग्निकुल" कहलाए।

💡 याद रखने की आसान ट्रिक — 4 अग्निकुल वंश

सोचिए एक कहानी: आग से 4 योद्धा निकले — "प्र-चौ-सो-प" — प्रतिहार (Parihara), चौहान (Chahaman), सोलंकी (Chalukya/Solanki), परमार (Paramara/Pawar)। इन चारों ने अलग-अलग इलाकों पर राज किया: प्रतिहार ने दक्षिणी राजस्थान, चौहान ने दिल्ली-अजमेर क्षेत्र, सोलंकी ने गुजरात और परमार ने पश्चिमी मध्य प्रदेश (मालवा) पर।

अग्निकुल कथा का सबसे पहला उल्लेख जयसिंह की "कुमारपाल चरित" और बाद में चंदबरदाई के "पृथ्वीराज रासो" में मिलता है। ध्यान रहे — यह एक पौराणिक व्याख्या है, वैज्ञानिक/ऐतिहासिक प्रमाण नहीं। कुछ विद्वान इसे "शुद्धिकरण की रस्म" (purification ritual) की प्रतीकात्मक कहानी मानते हैं — यानी जो विदेशी/अर्ध-विदेशी कुल हिंदू क्षत्रिय समाज में शामिल होना चाहते थे, उनके लिए अग्नि-यज्ञ एक तरह की "धार्मिक स्वीकृति की रस्म" रही होगी।

(B) अन्य प्रमुख सिद्धांत

- 1. सूर्यवंशी-चंद्रवंशी सिद्धांत (Solar-Lunar Theory):** परंपरागत रूप से राजपूत खुद को तीन बड़े वंशों में बाँटते हैं — सूर्यवंश (Suryavansha — भगवान राम की तरह सूर्य से संबंध जोड़ने वाले, जैसे सिसोदिया/गहलोत), चंद्रवंश (Chandravansha — कृष्ण/यदुवंशी परंपरा से जुड़े, जैसे यादव, भाटी) और अग्निवंश (Agnivansha)। इन तीन "वंशों (Vanshas)" से आगे 36 प्रमुख कुल (36 Kul) निकले, जिनका सबसे पुराना उल्लेख "कुमारपाल चरित" और "पृथ्वीराज रासो" में मिलता है।
- 2. विदेशी मूल का सिद्धांत (Foreign Origin Theory):** कर्नल जेम्स टॉड और विंसेंट स्मिथ जैसे यूरोपीय इतिहासकार मानते हैं कि कई राजपूत कुल असल में मध्य एशिया से आए हूण (Huns), शक (Scythians) और गुर्जर (Gurjara) जैसी विदेशी/अर्ध-विदेशी जातियों के वंशज थे, जो गुप्तोत्तर काल की उथल-पुथल में भारत आकर बसे और धीरे-धीरे हिंदू धर्म व क्षत्रिय व्यवस्था में शामिल (assimilate) हो गए। यह सिद्धांत मुख्यतः इस आधार पर टिका है कि "गुर्जर-प्रतिहार" नाम में स्वयं "गुर्जर" शब्द जुड़ा है, जो मूलतः एक मध्य-एशियाई कबीले का नाम माना जाता है।
- 3. स्वदेशी उत्पत्ति सिद्धांत (Indigenous Origin Theory):** सी.वी. वैद्य (C.V. Vaidya) और गौरीशंकर हीराचंद ओझा (G.H. Ojha) जैसे भारतीय इतिहासकार मानते हैं कि राजपूत मूल रूप से भारत की पुरानी क्षत्रिय जातियों से ही निकले हैं। इनका तर्क है कि गुप्तोत्तर काल की अव्यवस्था में स्थानीय सामंत (feudal chiefs), ब्राह्मण, तथा सैनिक नेता धीरे-धीरे स्वतंत्र होकर सत्ता हथियाने लगे और खुद को क्षत्रिय (राजपूत) घोषित कर लिया — यानी यह जाति मूलतः "सामाजिक उभार (social mobility)" की प्रक्रिया से बनी, न कि किसी एक नस्ल/मूल से।
- 4. क्षत्रियीकरण सिद्धांत (Kshatriyaization Theory):** यह अपेक्षाकृत आधुनिक समाजशास्त्रीय व्याख्या है — इसके अनुसार विभिन्न स्थानीय जनजातीय (tribal) व कृषक (peasant) समूहों ने समय के साथ ब्राह्मणों के सहयोग से अपनी वंशावली (genealogy) को पौराणिक सूर्यवंश/चंद्रवंश से जोड़कर स्वयं को "क्षत्रिय/राजपूत" के रूप में स्थापित किया — यह प्रक्रिया संस्कृतिकरण (Sanskritization) जैसी है।

ध्यान दें: राजपूतों की उत्पत्ति पर कोई एक अंतिम/सर्वमान्य उत्तर नहीं है — परीक्षा में हमेशा "अग्निकुल कथा + स्वदेशी सिद्धांत + विदेशी मिश्रण सिद्धांत + क्षत्रियीकरण" — चारों का संतुलित उल्लेख करें, किसी एक को पूर्ण सत्य मानकर न लिखें।

2. त्रिपक्षीय संघर्ष (Tripartite Struggle) — कन्नौज की लड़ाई

कन्नौज हर्षवर्धन की पुरानी राजधानी था, गंगा किनारे बसा हुआ उपजाऊ और व्यापारिक रूप से समृद्ध क्षेत्र, और रेशम मार्ग (Silk Route) से जुड़ा होने के कारण आर्थिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण था। इसलिए जो भी शासक कन्नौज जीत लेता, वह पूरे उत्तर भारत में अपनी सर्वोच्चता (supremacy) का दावा कर सकता था — यही कारण था कि तीन बड़ी शक्तियाँ इसके लिए लगभग 150 वर्षों तक लड़ती रहीं।

संघर्ष के तीन चरण (Three Phases)

1. प्रथम चरण (लगभग 786-816 ई.): शुरुआत लगभग 790 ई. में हुई, जब प्रतिहार शासक वत्सराज ने प्रयाग में पाल शासक धर्मपाल को हराया। लेकिन तभी दक्कन से राष्ट्रकूट शासक ध्रुव प्रथम ने उत्तर भारत पर आक्रमण किया और वत्सराज व धर्मपाल दोनों को हरा दिया — फिर भी राष्ट्रकूट स्थायी रूप से नहीं रुके और दक्कन लौट गए, क्योंकि उनका मुख्य उद्देश्य लूट व प्रतिष्ठा हासिल करना था, स्थायी विस्तार नहीं।
2. द्वितीय चरण (लगभग 816-836 ई.): प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर अधिकार कर लिया, लेकिन राष्ट्रकूट शासक गोविंद तृतीय ने पुनः आक्रमण कर उसे पराजित किया। फिर भी राष्ट्रकूट लौट गए और नागभट्ट द्वितीय ने वापस कन्नौज पर नियंत्रण जमा लिया।
3. तृतीय चरण (लगभग 836-950 ई.): यह चरण प्रतिहारों के चरम उत्कर्ष का काल था — मिहिर भोज (836-885 ई.) और महेंद्रपाल प्रथम (885-910 ई.) के अधीन प्रतिहार साम्राज्य अपने विस्तार के शिखर पर पहुँचा। अंततः राष्ट्रकूट शासक इंद्र तृतीय ने लगभग 916 ई. में कन्नौज पर पुनः आक्रमण कर उसे तबाह किया, जिससे प्रतिहार शक्ति को गहरा आघात पहुँचा और साम्राज्य टूटने लगा।

✓ अंतिम विजेता — प्रतिहार

- ◆ मिहिर भोज (Mihir Bhoj) ने राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय को हराकर कन्नौज पर स्थायी कब्जा किया
- ◆ कन्नौज आगे चलकर प्रतिहार साम्राज्य की राजधानी बना
- ◆ प्रतिहारों ने सबसे बड़ा भूभाग नियंत्रित किया
- ◆ लगभग 200 वर्ष तक उत्तर भारत में प्रतिहार सर्वोच्च शक्ति बने रहे

⚠ अंतिम परिणाम — तीनों कमजोर

- ◆ लंबे युद्ध ने तीनों साम्राज्यों को आर्थिक व सैन्य रूप से कमजोर कर दिया
- ◆ प्रतिहार साम्राज्य 10वीं सदी के अंत तक टूटने लगा
- ◆ छोटे-छोटे सामंत स्वतंत्र होकर राजपूत रियासतें (states) बनाने लगे
- ◆ इसी कमजोरी का फायदा उठाकर आगे तुर्क आक्रमणकारी (महमूद गजनवी आदि) भारत आए

"कन्नौज उस युग का 'ताज' था — जिसने भी इसे पहना, उसने खुद को उत्तर भारत का चक्रवर्ती सम्राट कहलवाया, पर असल में तीनों शक्तियाँ इस ताज की लड़ाई में अपनी ही ताकत गँवा बैठीं।"

— इतिहासकारों की सामान्य टिप्पणी

3. गुर्जर-प्रतिहार वंश (Gurjara-Pratihara Dynasty)

प्रतिहार वंश की स्थापना लगभग आठवीं सदी में हुई। "प्रतिहार" शब्द का अर्थ होता है "द्वारपाल (Doorkeeper)"। किंवदंती है कि इस वंश के पूर्वज भगवान राम के भाई लक्ष्मण के वंशज माने जाते थे, जिन्होंने राम के द्वारपाल की भूमिका निभाई थी — इसी से "प्रतिहार" नाम पड़ा।

👑 नागभट्ट प्रथम (लगभग 730-760 ई.)

प्रतिहार वंश का वास्तविक संस्थापक

- ◆ अरब आक्रमणकारियों (सिंध की ओर से आए मुस्लिम सेनाओं, जो 712 ई. में मोहम्मद बिन कासिम के सिंध विजय के बाद आगे बढ़ना चाहती थीं) को मालवा-गुजरात क्षेत्र में रोकने में सफल रहा — यह भारतीय इतिहास की एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है, क्योंकि इसने अगले लगभग 300 वर्षों तक उत्तर भारत को अरब विजय से बचाए रखा
- ◆ मालवा व गुजरात क्षेत्र में प्रतिहार सत्ता की नींव रखी

👑 वत्सराज (लगभग 775-800 ई.)

त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रारंभकर्ता

- ◆ कन्नौज पर अधिकार जमाने के लिए पाल शासक धर्मपाल को हराया — त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत
- ◆ राष्ट्रकूट शासक ध्रुव प्रथम से पराजित हुआ

👑 नागभट्ट द्वितीय (लगभग 800-833 ई.)

कन्नौज पर प्रतिहार अधिकार स्थापित करने वाला

- ◆ कन्नौज पर अधिकार किया और उसे प्रतिहार साम्राज्य से जोड़ा
- ◆ राष्ट्रकूट शासक गोविंद तृतीय से अस्थायी रूप से पराजित हुआ, पर बाद में सत्ता पुनः स्थापित की

👑 मिहिर भोज (भोज प्रथम) (836-885 ई.)

प्रतिहार वंश का सबसे शक्तिशाली शासक

- ◆ साम्राज्य पंजाब से लेकर कठियावाड़ (गुजरात) और कोशल-कन्नौज तक फैला
- ◆ विष्णु भक्त था, "आदिवराह" की उपाधि धारण की और ग्वालियर में तेली का मंदिर बनवाया
- ◆ राष्ट्रकूट व पाल दोनों से युद्ध लड़े और साम्राज्य का विस्तार किया
- ◆ अरब यात्री सुलेमान (Sulaiman, 851 ई. में भारत आया) ने भोज की सेना और शासन की प्रशंसा में लिखा — कहा कि प्रतिहार शासक के पास श्रेष्ठ घुड़सवार सेना (cavalry) थी, यद्यपि वह इस्लाम धर्म का सबसे बड़ा शत्रु भी था

👑 महेंद्रपाल प्रथम (885-910 ई.)

भोज का उत्तराधिकारी, साम्राज्य अपने चरम पर

- ◆ बंगाल व मगध में पालों को हराकर (890 ई. के आसपास) प्रभाव बढ़ाया
- ◆ साम्राज्य का विस्तार गुप्त साम्राज्य जितना बड़ा माना जाता है

- ◆ राजशेखर जैसे महान विद्वान इसके राजकवि व गुरु थे — जिन्होंने "काव्यमीमांसा" जैसा प्रसिद्ध साहित्यिक ग्रंथ रचा

👑 राज्यपाल (लगभग 1018 ई.)

महमूद गजनवी के आक्रमण के समय का दुर्बल शासक

- ◆ 1018 ई. में महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया — राज्यपाल ने बिना युद्ध किए भाग जाना उचित समझा, जिसके कारण अन्य राजपूत शासकों (जैसे चंदेल विद्याधर) ने उसकी निंदा कर उसकी हत्या करवाई
- ◆ यह घटना दिखाती है कि इस समय तक प्रतिहार साम्राज्य पूरी तरह बिखर चुका था

प्रशासन, अर्थव्यवस्था एवं पतन

प्रतिहार साम्राज्य अपने समय के सबसे सुव्यवस्थित साम्राज्यों में गिना जाता है — शासक न केवल कुशल योद्धा थे बल्कि कला व साहित्य के संरक्षक भी थे। साम्राज्य कई प्रांतों (भुक्ति) में बँटा था, जो आगे विषय (जिलों) में और फिर ग्रामों में विभाजित थे। लेकिन दसवीं सदी में राष्ट्रकूट शासक इंद्र तृतीय (लगभग 916 ई. में) ने कन्नौज पर आक्रमण कर उसे तबाह कर दिया, जिसके बाद प्रतिहार साम्राज्य लगातार कमजोर होता गया और अंततः छोटे-छोटे राजपूत सामंत राज्यों (चौहान, परमार, सोलंकी, चंदेल, गहड़वाल) में बिखर गया।



प्रतिहार शासक	शासनकाल	मुख्य कार्य/उपलब्धि
नागभट्ट प्रथम	730-760 ई. (लगभग)	अरब आक्रमण रोक, वंश की नींव रखी
वत्सराज	775-800 ई. (लगभग)	त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत, धर्मपाल को हराया
नागभट्ट द्वितीय	800-833 ई. (लगभग)	कन्नौज पर अधिकार, राष्ट्रकूट गोविंद तृतीय से पराजित
मिहिर भोज	836-885 ई.	सबसे शक्तिशाली शासक, "आदिवराह" उपाधि
महेंद्रपाल प्रथम	885-910 ई.	साम्राज्य चरम पर, राजशेखर राजकवि (काव्यमीमांसा)
राज्यपाल	लगभग 1018 ई.	महमूद गजनवी के आक्रमण के समय दुर्बल शासक, हत्या

4. पाल वंश (Pala Dynasty)

पाल वंश की स्थापना लगभग 750 ई. में गोपाल (Gopala) ने की थी। यह खास बात है कि गोपाल को स्थानीय सरदारों/प्रधानों ने आपसी सहमति से (एक तरह के लोकतांत्रिक चुनाव जैसी प्रक्रिया से) राजा चुना था — बंगाल में उस समय अराजकता (अव्यवस्था) फैली हुई थी, जिसे इतिहास में "मात्स्यन्याय" (बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाए जैसी अव्यवस्था) कहा गया।

👑 धर्मपाल (770-810 ई.)

पाल वंश का सबसे महान शासक

- ◆ "परमभट्टारक", "परमेश्वर" व "महाराजाधिराज" जैसी बड़ी उपाधियाँ धारण कीं
- ◆ त्रिपक्षीय संघर्ष में सक्रिय भूमिका निभाई, उत्तर भारत के बड़े हिस्से पर प्रभाव जमाया, कन्नौज में अपनी पसंद का शासक (चक्रायुध) भी बिठाया

- ◆ बौद्ध धर्म का महान संरक्षक — विक्रमशिला महाविहार (बिहार, भागलपुर के पास) की स्थापना की और नालंदा विश्वविद्यालय को भी संरक्षण दिया
- ◆ बौद्ध विद्वान हरिभद्र को अपना आध्यात्मिक गुरु बनाया

👑 देवपाल (810-850 ई.)

साम्राज्य अपने भौगोलिक विस्तार के चरम पर

- ◆ हूणों तथा कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहार शासकों के विरुद्ध सफल सैन्य अभियान चलाए
- ◆ सोमपुर महाविहार (आज बांग्लादेश में) का विस्तार व पुनर्निर्माण करवाया
- ◆ साम्राज्य असम, उड़ीसा तक फैला होने के प्रमाण मिलते हैं

👑 महिपाल प्रथम (988-1038 ई. (लगभग))

पाल साम्राज्य का पुनरुद्धारक (Reviver)

- ◆ देवपाल के बाद पाल साम्राज्य लगभग एक सदी तक कमजोर रहा (गृह-युद्ध व अराजकता के कारण) — महिपाल प्रथम ने इसे पुनः संगठित किया
- ◆ चोल शासक राजेंद्र चोल के आक्रमण (लगभग 1023 ई.) का सामना किया


विक्रमशिला महाविहार
(भागलपुर, बिहार)

🕒 **काल:** धर्मपाल द्वारा स्थापित, 8वीं-12वीं सदी

★ **महत्व:** बौद्ध शिक्षा का प्रमुख केंद्र, नालंदा के समकक्ष माना जाता था; तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु अतीश दीपांकर यहीं से शिक्षित हुए थे; तांत्रिक बौद्ध अध्ययन का प्रमुख केंद्र

पाल कला — "पाल शैली" (Pala School of Art)

पाल शासकों के संरक्षण में एक विशिष्ट कला शैली विकसित हुई, जिसे "पाल शैली" कहा जाता है। इसमें बौद्ध देवी-देवताओं (बुद्ध, बोधिसत्व, तारा आदि) की काले पत्थर (black basalt stone) में बनी मूर्तियाँ तथा ताड़पत्रों पर बनी लघु-चित्रकारी (miniature paintings/manuscript illustrations) शामिल हैं। यह शैली आगे चलकर तिब्बत व दक्षिण-पूर्व एशिया (जावा, सुमात्रा) की बौद्ध कला को भी प्रभावित करती है — क्योंकि पाल शासकों के व्यापारिक व धार्मिक संबंध इन क्षेत्रों से भी थे।

💡 याद रखने की ट्रिक

पाल वंश को "पूर्व के बौद्ध रक्षक" के रूप में याद रखें — जैसे मौर्य वंश में अशोक बौद्ध धर्म का संरक्षक था, वैसे ही मध्यकाल में जब बौद्ध धर्म भारत में लगभग समाप्त हो रहा था, तब बंगाल के पाल शासकों ने ही उसे आखिरी सहारा दिया — नालंदा, विक्रमशिला, सोमपुर जैसे महाविहार इसी दौर की देन हैं।

5. राष्ट्रकूट वंश (Rashtrakuta Dynasty)

राष्ट्रकूट वंश की स्थापना दंतिदुर्ग (Dantidurga) ने लगभग 753-756 ई. में की, जब उसने दक्कन के चालुक्य शासकों को हराकर सत्ता हथिया ली। राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेट (आज के कर्नाटक में) थी। यह वंश लगभग 755 से 975 ई. तक दक्कन क्षेत्र पर शासन करता रहा।

गोविंद तृतीय (793-814 ई.)

त्रिपक्षीय संघर्ष में सर्वाधिक सफल राष्ट्रकूट शासक

- ◆ एक ही अभियान में प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय और पाल शासक धर्मपाल दोनों को हराया
- ◆ फिर भी दक्कन लौट गया — राष्ट्रकूटों की नीति स्थायी उत्तर भारतीय विस्तार की बजाय लूट-प्रतिष्ठा पाने की थी

कृष्ण प्रथम (756-773 ई.)

एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माता

- ◆ एलोरा (महाराष्ट्र) में विश्व-प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर बनवाया — यह एक ही चट्टान को काटकर (monolithic rock-cut) बनाया गया मंदिर है
- ◆ द्रविड़ स्थापत्य शैली का उत्कृष्ट उदाहरण, आज UNESCO विश्व धरोहर स्थल (1983 में घोषित)

अमोघवर्ष प्रथम (लगभग 814-878 ई.)

विद्वान शासक, साहित्य प्रेमी

- ◆ "कविराजमार्ग" नामक कन्नड़ भाषा के सबसे पुराने ग्रंथ का एक भाग रचा (या प्रेरणा दी)
- ◆ जैन धर्म का अनुयायी था, एलोरा की जैन गुफाएँ इसी के काल में बनीं; जैन आचार्य जिनसेन इनके गुरु व दरबारी विद्वान थे, जिन्होंने "आदिपुराण" की रचना की
- ◆ लंबे समय (लगभग 64 वर्ष) तक शासन किया, शांतिप्रिय व धर्मपरायण शासक के रूप में प्रसिद्ध; अरब यात्री अल-मसूदी ने इसे विश्व के चार महानतम राजाओं में गिना

इंद्र तृतीय (914-929 ई.)

त्रिपक्षीय संघर्ष में राष्ट्रकूट शक्ति चरम पर

- ◆ 916 ई. के आसपास कन्नौज पर आक्रमण कर उसे तहस-नहस किया — प्रतिहार शक्ति को गहरा आघात पहुँचाया
- ◆ राष्ट्रकूट शक्ति का यह दौर सबसे प्रभावशाली माना जाता है

कृष्ण तृतीय (939-967 ई.)

राष्ट्रकूट साम्राज्य का अंतिम शक्तिशाली शासक

- ◆ दक्षिण में चोल शासकों को हराकर तंजौर तक अभियान चलाया
- ◆ उत्तर में प्रतिहार शासक (मिहिर भोज के उत्तराधिकारी) से भी संघर्ष किया, हालांकि मिहिर भोज के समय प्रतिहारों ने इन्हें परास्त किया था
- ◆ इसके बाद राष्ट्रकूट वंश तेजी से कमजोर हुआ और लगभग 973 ई. में चालुक्यों (तैलप द्वितीय) ने इसका अंत कर दिया